योगी कथामृत ने बदला जीवन, जापान छोड़ आए भारत

संजय कृष्ण • रांची

स्वामी निर्वाणानंद गिरि। उम्र का अंदाजा नहीं लगा सकते। वह भारत में पिछले 51 साल से रह रहे हैं। योगदा आश्रम से जुड़े हैं। जापान के रहने वाले हैं। छोटी काया। लंबे बाल। हंसता चेहरा। योगी के लक्षण उनके चेहरे से साफ झलकती है। जापानी हैं, हिंदी भी बोल लेते हैं, समझ लेते हैं। योगदा आश्रम में रहने वाले वह अकेले ऐसे विदेशी हैं। उनसे पुराना कोई नहीं है- ये बात स्वामी निष्ठानंद बताते हैं। संन्यास लेने के बाद उनका नाम स्वामी निर्वाणानंद गिरि पड़ गया है। यही अब नाम उनकी पहचान है। अपने बारे में बताते हैं, जब वे आर्किटेक की पढ़ाई कर रहा था, तब परमहंस योगी की योगीकथामृत एक बुक

स्वामी निर्वाणानंद गिरि • जागरण

शॉप से खरीदी। वह जापानी का प्रथम संस्करण था। यह बात 1959 की है। इस पुस्तक ने बहुत प्रभावित किया। जीवन की धारा बदलने लगी। फिर जो इसकी अंतरराष्ट्रीय संस्था यूएसए में थी, वहां की सदस्यता ली। दया माता उस समय थीं। इसके बाद वहां का साहित्य नियमित पढ़ता रहा। पढ़ाई भी पूरी कर ली। इसके बाद कई जगह नौकरी भी। लेकिन, धीरे-धीरे मन बदलने लगा। संन्यास की भावना जगी। तब अपना देश, अपने लोग, घर-बार और दोस्तों को छोड़ यूएसए चला गया। कुछ वीजा का प्राब्लम था। पता चला कि इसका मूल भारत में है। फिर यहां चला। 1966 में रांची आया और यहां से भी देश के कई आश्रमों में रहा। अभी रांची में रह रहा हूं। बचपन से ही मन में यह इच्छा थी कि आखिर इस ब्रह्मांड को कौन चलता है? सूर्य, तारे, चांद क्या हैं? सृष्टि क्या है? ये सवाल मथते थे। योगी कथामृत ने मेरी जिज्ञासाओं का शमन किया और फिर कुछ और पाने की चाह से देश छोड़ भारत चला आया। अब भारत का नागरिक भी बन गया हूं।